मानव जीवन का मूल लक्ष्य;

भौतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार की सुखशांति प्राप्त करना (अर्थात मानव से महामानव तक का सफर पूर्ण करना) है:

हमारा व संपूर्ण सृष्टि का अस्तित्व प्रकृति व ईश्वर की ''लेन–देन'' व ''ग्रहण–त्याग'' की प्रक्रिया (प्राकृतिक–चक्र) के कारण टिका हुआ है। उदाहरण के लिए– हम भोजन ग्रहण करें और मल का त्याग न करें, श्वांस लें और उसे छोड़ें नहीं तो जीवन चल नहीं सकता। इसी प्रकार सूर्य की उपस्थिति में प्रकृति में विद्यमान नियमों से समुद्र, झील, तालाब और नदियाँ– बादल को जल नहीं दें तथा बादल– समुद्र, झील, तालाब और नदियों को पुनः जल वापस नहीं करे तो पृथ्वी के जीवों को अन्न और जल प्राप्त नहीं होगा, सबका जीवन संकट में पड़ जाएगा। स्पष्ट है सुख–शांति से जीने के लिए निश्चित ही प्रकृति व ईश्वर के ''लेन–देन'' के नियम का पूर्ण दृढ़ता के साथ पालन करना होगा। हम इस जगत में खाली हाथ आते हैं, हम यहाँ जो कुछ भी प्राप्त करते हैं वह मात्र हमारे स्वयं के कर्मों व भाग्य का फल नहीं बल्कि वह हमारे माता–पिता, बान्धव, परिजन, गुरु, समाज, प्रकृति आदि के उपकारों का फल होता है। इसलिए प्रकृति के ''लेन–देन'' के नियमानुसार हमें उनके उपकारों का ऋण चुकाने के लिए उनकी सेवा, पोषण और रक्षण करना आवश्यक है, इसके बिना सुख–शांति से जिया जाना संभव नहीं है। लेने (भोग, ग्रहण करने) से दूसरों का शोषण होता है तथा देने (त्याग, छोड़ने) से दूसरों का पोषण होता है। दूसरों का पोषण करना ही परमार्थ है। यही मानव धर्म व मानवीयता है तथा यही मानव से महामानव बनने अर्थात परम सुख–शांति, मोक्ष व निर्माण प्राप्त करने का सीधा व सच्चा मार्ग है।

जगत के इष्ट व महामानव हमारे आदर्श (ICON) हैं। वे हमें जीवन की सच्ची राह दिखते हैं। वे ''परहित–साधना'' कर प्राणीमात्र के अहेतुक मित्र बन जाते है तथा वे जगत के प्राणियों से कम से कम लेने तथा उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा देने के आदर्श का पूर्ण निष्ठा से जीवन भर पालन करते हैं। वे हमें संदेश देते हैं कि प्रकृति व ईश्वर के विधान अनुसार प्रत्येक मानव को उसके द्वारा जीवन भर किए गए अभ्यास के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई क्षमता व मनःस्थिति के अनुरूप ही उसे अगली गति प्राप्त होती है। यह प्रकृति का अकाट्य नियम है, जिसे कभी बदला नहीं जा सकता। इसे भौतिक जगत में उपलब्ध उदाहरणों से ठीक से समझा जा सकता है। जिस तरह अच्छा डॉक्टर बनने के लिए पूर्व तैयारी की आवश्यकता है– सर्वप्रथम कक्षा 11वीं में PCB लेना होता है, फिर मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने और वहाँ के प्रोफेसर्स द्वारा प्रस्तुत लेक्चर्स को अच्छे से समझने के लिए उपयुक्त बौद्धिक क्षमता और इंसानी स्वाभाव विकसित करना आवश्यक है, जो PCB की पूर्व से अच्छी तैयारी करने से ही संभव है। इसके बिना मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाना और अच्छा डॉक्टर बन पाना संभव नहीं है। ठीक इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता (एक निर्विकार, परम पवित्र एवं अभाव रहित सत्ताः स्वर्ग, वैकुण्ठ, जन्नत, मोक्ष आदि) में प्रवेश पाना है और वहाँ ठहरकर उसका आनंद उठाना है तो हमें उस सत्ता की आवश्यकता के अनुरूप अपने स्वाभाव व मनःस्थिति का पूर्व से ही निर्माण करना होगा, इसके लिए जीवन भर नेकी का सतत अभ्यास करना आवश्यक है, इसके बिना स्वर्ग, वैकुण्ठ, जन्नत, मोक्ष आदि प्राप्त कर पाना कभी संभव नहीं है। हमारे इष्ट व महामानव परम दयालु हैं, वे मानवीय आदर्शों व गुणों का जीवन भर दृढ़ता से पालन कर हमें मानव जीवन सफल बनाने की प्रेरणा देते हैं।

यदि कम परिश्रम और अल्प चतुराई के माध्यम से ही जीवन को सफल बनाना है तो हमें इष्टों व महामानवों का सबसे सीधा व सच्चा मार्ग अपना लेना चाहिए। सभी इष्टों व महामानवों के ऐसे गुण व आदर्श जो सभी में कॉमन हैं उन्हें ग्रहण करना चाहिए तथा जो विचार व भाव उन सभी में कॉमन नहीं हैं उनका त्याग कर देना चाहिए। मतलब उन सभी में कॉमन– वैज्ञानिक दृष्टि, करुणा, प्रेम, समता, संवेदना, सद्भावना, ईमान, शील, धैर्य, सत्य, निष्ठा आदि धारण कर परमार्थ करने के साथ मात्र ईमान और मेहनत की कमाई से खुद का और अपनों का भरण–पोषण करना चाहिए। जीवन का यह आदर्श ही सभी इष्टों व महामानवों की सच्ची पूजा और उनकी दया–मेहर व आशीर्वाद प्राप्त करने का मार्ग है, यही संविधान के अनुच्छेद 51(क) के अनुसार हमारा मूल कर्त्तव्य है, यही न्याय–धर्म व मानवतावाद है तथा यही सद्गति अथवा जगत में इज़्ज़त, दौलत, शोहरत के साथ स्वर्ग, मोक्ष व निर्माण प्राप्ति का मार्ग है अर्थात यही भौतिक और अध्यात्मिक सुख–शांति दोनों प्राप्ति का मार्ग है, मतलब यही मानव से महामानव तक का सफ़र पूर्ण करने का सीधा, सरल व सच्चा मार्ग है।

(डॉ. एन.एल. प्रजापति)
प्राचार्य, इंदिरा गांधी इंजीनियरिंग महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)